श्री चौबीस तीर्थंकर चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा पढ़ते यहाँ, पाने मुक्ती द्वार।।
तीर्थंकर पद पाए हैं, चौबीसों जिनराज।
'विशद' भाव से हम यहाँ, गुण गाते हैं आज।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, जिसमें भरत क्षेत्र शुभकारी।
चौबिस तीर्थंकर शिव पाए, वर्तमान के चौबीस गाए।।
आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, प्रथम हुए मुक्तीपथ गामी।
अजितनाथ के हम गुण गाते, मुक्ती की जो राह दिखाते।।
सम्भव कार्य असम्भव करते, कष्ट सभी जीवों के हरते।
अभिनंदन की महिमा न्यारी, गाती है जगती यह सारी।।
सुमतिनाथ सुमति के दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
पद्म प्रभु पद्मेश कहलाए, पद्म के ऊपर आसन पाए।।
जिन सुपार्श्व की है बलिहारी, मुक्ती पाए हो अविकारी।
चन्द प्रभु चन्दा सम सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।
शीतलनाथ सुशीतल गाए, शीतलता जग में प्रगटाए।
श्रेयनाथ हैं श्रेय प्रदाता, जग में मुक्ती पद के दाता।।
वासुपूज्य गुण विमल प्रकाशी, बने आप शिवपुर के वासी।।
जिन अनन्त गुण पाए अनन्ता, ज्ञान अनन्त पाए भगवन्ता।
धर्मनाथ जिन धर्म के धारी, तज के राग हुए अनगारी।।
शांतिनाथ जिन हुए निराले, जग को शांती देने वाले।
कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, तीन लोक में करूणाकारी।।
अरहनाथ कर्मारि हन्ता, प्रभु गुण तुमरे रहे अनन्ता।
मोह मल्ल के नाशन हारे, मल्लिनाथ जिनराज हमारे।।
मुनिसुव्रत से व्रत कई पाए, क्षीण मोह प्रभु आप कहाए।
नमीनाथ पद नमन हमारा, हमको भी दो नाथ सहारा।।
नेमिनाथ जगनाथ कहाये, ऊर्जयन्त से मुक्ती पाए।
पार्श्वनाथ महिमा दिखलाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए।।

महावीर सा वीर न गाया, सारे जग में कोई पाया।
चौबिस यह तीर्थंकर जानो, मोक्ष मार्ग के नेता मानो॥
जो भी तीर्थंकर को ध्याये, भाव सहित शुभ महिमा गाए।
वह भी तीर्थंकर को ध्याये, सारे जग का वैभव पाए॥
तीर्थंकर की महिमा न्यारी, सारे जग में अतिशयकारी।
प्रभु जब केवलज्ञान जगाते, समवशरण आ देव रचाते॥
गणधर कोई बनकर आते, वह भी मुक्ति पथ दर्शाते।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, प्राणी दर्शन ज्ञान जगाते॥
समवशरण में केवलज्ञानी, आते है शिवपद के दानी।
पूरब धारी मुनिवर आते, शिक्षक भी स्थान बनाते॥
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी, साथ में आते अवधिज्ञानी।
संत विक्रिया ऋद्धीधारी, वादी भी आते अनगारी॥
यक्ष यक्षिणी भी शुभ आते, श्रावक दिव्य देशना पाते।
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकते॥
तीर्थंकर पदवी को पाएँ, शिवपुर अपना धाम बनाएँ।
हम भी शिवपथ के अनुगामी, बन जाएँ हे अन्तर्यामी॥

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
चौबीसों जिनराज के, चरण झुकाए माथ॥
सुख-शांति सौभाग्य श्री, पाए अपरम्पार।
अल्प समय में वह 'विशद', पाए भव से पार॥

जाप : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार॥

दोहा– वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान॥

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी॥

ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी॥
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए॥
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए॥
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई॥
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुदाई॥
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई॥
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी॥
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया॥
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी॥
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया॥
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया॥
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।

शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
शांतिनाथ भगवान के, करते चरण प्रणाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने निज का धाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांतिजिन गाए।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभुजी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।

पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्त्र नेत्र से दर्शन पाया।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।
सहस्त्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवंत हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।
आत्म ध्यान कीन्हें तव स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।
नो सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।
अहार क्षेत्र वानपुर जानो, बीना बारहा भी पहिचानो।
रामटेक सीरोन कहाया, खजुराहो पचराई गाया।।
गाँव-गाँव में बिम्ब बताए, गिनती कहो कौन कर पाए।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग-शोक दारिद्र नशाए।।

शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख-शांति सौभाग्य जगावे।
निज आतम का वैभव पावे, अनुक्रम से फिर शिवपुर जावे।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

दोहा– अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद' चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।

वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभु ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार॥
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान॥

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम॥

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान! उजागर।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुख हरते॥
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में॥
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई॥
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, शची ने प्रभु को गोद बिठाया॥
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये॥
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया॥
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया॥
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई॥
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोई अनिरुद्ध के देते नारे॥
नेमिनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।
ऊंगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई॥
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।

हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबराए॥
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई॥
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोत्ती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया॥
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोत्ती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी॥
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया॥
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैय्या नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया॥
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया॥
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुँचे फिर भाई॥
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी॥
श्री कृष्ण ने की होशियारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।
नेमि दूल्हा बनकर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे॥
राजुल सुनकर के घबराई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया॥
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए॥
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया, वरदत्त ने यह पुण्य कमाया॥
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
समवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए॥
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।

आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई॥
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ॥

सोरठा– चालीसा चालीस, दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, रोग शोक चिंता मिटे॥

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करुण प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी॥
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए॥
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्वहन कराया॥
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला॥
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे॥
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया॥
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मातवी धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया॥
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशी पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए॥
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए॥
पद्मावती के फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई॥

चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया॥
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए॥
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए॥
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई॥
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते॥
पुत्रहीन सुत साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते॥
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

श्री महावीर चालीसा

दोहा– सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम॥
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदलते तकदीर॥

(चौपाई)

जय-जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी॥
पुरूषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखलाए।

राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीया भक्त प्रभु जी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरू तल ध्यान लगाए।।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े हो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।

कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सांय केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।
चरण कमल में हम सिर नाते, 'विशद' भाव से शीष झुकाते।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख-शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

श्रीराम चालीसा

दोहा

जिन सिद्धों को नमन कर, परमेष्ठी को ध्याय।
चालीसा श्री राम का, पढ़े भक्त सुखदाय।।

''चौपाई''

जय बलभद्र राम कहलाए, जिनकी महिमा यह जग गाए।
राजा दशरथ के सुत गाए, माता कौशल्या कहलाए।।
जनम अयोधया नगरी पाए, नर नारी सारे हर्षाए।
लक्ष्मण भरत शत्रुधन भाई, जिनकी महिमा जग ने गाई।।
बात स्वयंवर की जब आई, जिसकी फैली जग प्रभुताई।
वज्रावर्त धनुष को पाए, प्रत्यञ्जा जो शीघ्र चढ़ाए।।
वह सीता सति को परणाए, इस युग का वह वीर कहाए।
राजा कई वहाँ पर आए, किन्तु धनुष उठा ना पाए।।
राम धनुष को आन उठाए, प्रत्यत्त्चा वह शीघ्र चढ़ाए।
सीता वरमाला ले आई, हुआ स्वयंवर राम का भाई।।

राम हृदय में तब हर्षाए, सीता को ले घर को आए।
नर-नारी तव नाचे गाए, मन में भारी हर्ष मनाए।।
एक बार की घटना भाई, दशरथ खुश थे मन में भाई।
कैकेई को वरदान जो दीन्हे उसके मन को खुश कर दीन्हे।।
राज तिलक का अवशर आया, राम का तव वनवास दिलाया।
दशरथ मन में तव घबड़ाए, किन्तु वचन टाल ना पाए।।
वचन पिता का राम निभाएँ, साथ में भाई लक्ष्मण आए।
साथ में चल दी सीता रानी, उसने वन जाने की ठानी।।
भरत राम की आज्ञा पाए, हो विरक्त जो राज्य चलाए।
राम ने वंशगिरीह पर जानो, जिन मंदिर बनवाया मानो।।
चलकर दण्डक वन में आए, मुनिवर को आहार कराए।
रावण की खोटी मति आई, सीता हरण किया तब भाई।।
व्याकुल हुए राम तब मन में, फिर खोजते सारे वन में।
घायल गिद्ध राज को पाया, राम ने उसको व्रत दिलवाया।।
राम की सेना सेनालंका आई, युद्ध हुआ फिर वहाँ पे भाई।
रावण ने तब चक्र चलाया, लक्ष्मण ने तब उसको पाया।।
फिर लक्ष्मण ने चक्र चलाया, लक्ष्मण ने तब उसको पाया।
फिर लक्ष्मण ने चक्र चलाया, रावण को तव मार गिराया।।
सीताा को पाकर हर्षाए, नगर अयोध्या वापिस आये।
लोकापवाद नगर में आया, सीता को वन में छुड़वाया।।
वज्रजंघ सीता को पाया, पुण्डरीकपुर लेकर आया।
लव कुश जन्म वहाँ पर पाए, वज्र जंघ शिक्षा दिलवाए।।
जिनने राम से युद्ध कराया, पुत्र समागम राम ने पाया।
सीता को फिर वापस पाए, अग्नि परीक्षराा तव करवाए।।
कमल बना अग्नी से भाई, सीता श्रेष्ड़ सती कहलाई।
पृथ्वी मती आर्यिका गाई, सीता जिनसे दीक्षा पाई।।
मरण समाधि जिनने पाया, अच्युत स्वर्ग जीव उपजाया।
कुछ वर्षों तक राज्य चलाए, रामचन्द्र फिर दीक्षा पाए।।
कोटि शिला पर ध्यान लगाए, भारी कर्म निर्जरा पाए।
तुंगीगिर पर पहुँचे स्वामी, हुए आप मुक्ती पथ गामी।।
रामनाम को जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
इस भव में सुख वैभव पाते, अन्त में मोक्ष महापद पाते।।
विशद भावना यही हमारी, शिवपदद पाएँ हे त्रिपुरारी।

दोहा

चालीस चालीस दिन, पढ़े भक्ति के साथ।
इस भव के सुख प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
रोक शोक आदिक मिटे, पावे ज्ञान निधान।
कर्म नाश कर अन्त में, प्राप्त करे निर्वाण।।

हनुमान चालीसा

दोहा– नव देवों को नमन कर, जिनवाणी उर धार।
चालीसा हनुमान का, गाते योग सम्हार।।

''चौपाई''

जय हनुमान ज्ञान के धारी, भक्त राम के हे त्रिपुरारी।
पवनञ्जय के राज दुलारे, सती अञ्जना के तुम प्यारे।।
गिरि विजयार्थ का दक्षिण गाया, शुभादित्य पुर नगर बताया।
नृप प्रहलाद राज कहलाए, जिन सुत पवनञ्जय शुभ गाए।।
सती अञ्जना जिनकी रानी, धर्म परायण जानी मानी।
कर्म उदय में जिसका आया, पति वियोग जिस कारण पाया।।
बाइस वर्ष का समय बिताया, पुण्योदय फिर उसका आया।
युद्ध हेतु पवनञ्जय आये, मान सरोवर का तट पाए।।
चकवी वहाँ तड़पती पाई, वियोग हुआ चकवा का भाई।
तव पत्नी की याद सताई, मित्र प्रहस्त को बात बताई।।
लौट के पवनञ्जय गृह आए, द्वार अञ्जना के खुलवाए।
देख अञ्जना तब हर्षाई, मन में फूली नहीं समाई।।
पवनञ्जय संग रात बिताई, जाने लगे पवनञ्जय भाई।।
मन में तब रानी घबड़ाई, उसने पति से बात सुनाई।।
मात पिता से मिलकर जाओ, मिलने का सब हाल बताओ।
उसके मन संकोच समाया, मुदरी देकर धैर्य बंधाया।।
गर्भ चिह्न रानी के आए, घर से सास ससुर निकलाए।
पिता के गृह पर चलकर आई, पिता निकाले घर से भाई।।
सखि बसन्त माला कहलाई, वन में जिसका साथ निभाई।
जन्म गुफा में जिनने पाया, पशुओं ने भी हर्ष मनाया।।

हनुरूह द्वीप का स्वामी आया, प्रती सूर्य राजा कहलाया।
वानर वंशी आप कहाए, हनुमान शुभ नाम जो पाए।।
श्रीराम के भक्त बताए, जिनकी महिमा यह जग गाए
महाशक्ति के धारी जानो, महाबली जिनको पहिचानो।।
रावण दुष्ट हुआ अभिमानी, सीता हरण की जिसने ठानी।
लंका सीता को पहुँचाया, पंचवटी में जिन्हें रूकाया।
गये खोजने तव रघुराई, किन्तु सीता ना वह पाई।
सेना ने हनुमान सिधाए, योद्धा सब लंका में आए।।
सीता को तव खोज निकाले, सीता की तव स्वयं हवाले।
नगर कर्ण कुण्डल में भाई, हनुमान ठहरे सुखदायी।।
नष्ट भ्रष्ट लंका भर दीन्हे, रावण से वह बदला लीन्हे।
सीता को ली वापिस आए, परिजन सारे हर्ष मनाए।।
एक बार हनुमत गुणधारी, परिजन साथ में लेकर भारी।
मेरू चैत्य वन्दन को आए, जिन परविार साथ में लाए।।
चर्चा धर्म की करते भाई, धर्म रहा मुक्ती पद दायी।
तारा दिखा टूटते नभ्ज्ञ में, तव वैराग्य जगाए मन में।।
यह संसार असार बताया, हनुमान के मन में आया।
धर्म रत्न योगी तब पाए, उनसे दीक्षा को अपनाए।।
साढ़े सात सौ विद्याधारी, साथ में जिनने दीक्षाधारी।
तपकर अपने कर्म नशाए, अनुपम केवल ज्ञान जगाए।।
तुंगीगिरि से मुक्ती पाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
जिनको भाव सहित जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।

दोहा

राम भक्त कहलाए जो, संयम धर अनगार।
जिनकी अर्चा से 'विशर' पाए भव से पार।।
सुख शान्ती सौभाग्यशुभ, पाए सर्व महान।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पाएँ जीव निर्वाण।।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान।।
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।
संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित जो दीन्हें।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।
द्वितीय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।
अविलचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।

कुन्दकूट परप्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली।
कूट सुवीर पे जो जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।
पक्षी भी तन्मय हो जाते, मानो प्रभु की महिमा गाते।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले।।
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें।।
तीर्थ वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।
गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।
तुमरे गुण सारा जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा।।
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता।।
तुमरी धूल लगाकर माथें, भाव सहित तव गाथा गाते।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार।।

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री सरस्वती (जिनवाणी) चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, जिनश्रुत कहा अनन्त।।
दिव्य ध्वनि जिनदेव की, सरस्वती है नाम।
चालीसा लिखते यहाँ, करके विशद प्रणाम।

(चौपाई)

जय-जय सरस्वती जिनवाणी, तुम हो जन-जन की कल्याणी।
प्रथम भारती नाम कहाया, द्वितिय सरस्वती शुभ गाया।।
तृतीय नाम शारदा जानो, चौथा हंसगामिनी मानो।
पञ्चम विदुषां माता गाई, वागीश्वर छठवाँ शुभ पाई।।
सप्तम नाम कुमारी गाया, अष्टम ब्रह्मचारिणी पाया।
जगत माता नौमी शुभ जानो, दशम नाम ब्राह्मिणि पहिचानो।।
ब्रह्माणी ग्यारहवाँ भाई, बारहवाँ वरदा सुखदायी।
नाम तेरहवाँ वाणी गाया, चौदहवाँ भाषा कहलाया।।
पन्द्रहवाँ श्रुतदेवी माता, सोलहवाँ गौरी दे साता।
सोलह नाम युक्त जिनमाता, सबके मन की हरे असाता।।
द्वादशांग युत वाणी गाई, चौदह पूर्व युक्त बतलाई।
आचारांग प्रथम कहलाया, दूजा सूत्र कृतांग बताया।।
स्थानांग तीसरा जानो, चौथा समवायांग बखानो।
व्याख्या प्रज्ञप्ति है पंचम, श्रातृकथा शुभ अंग है षष्ठम।।
उपाशकाध्ययन अंग सातवाँ, अन्तः कृद्दश रहा आठवाँ।
नवम् अनुत्तर दशांग बताया, दशम प्रश्न व्याकरण कहाया।।
सूत्र विपांग ग्यारहवाँ जानो, दृष्टिवाद बारहवाँ मानो।
पाँच भेद इसके बतलाए, पहला शुभ परिकर्म कहाए।।
सूत्र दूसरा भेद बखाना, भेद पूर्वगत तृतीय माना।
चौथा प्रथमानुयोग कहाया, पंचम भेद चूलिका गाया।।
भेद पूर्वगत के शुभकारी, चौदह होते मंगलकारी।
पहला उत्पाद पूर्व बखाना, पूर्व अग्राणीय द्वितीय माना।।
तीजा वीर्य प्रवाद कहाया, अस्तिनास्ति प्रवाद फिर गाया।
पंचम ज्ञान प्रवाद बखाना, सत्य प्रवाद छठा शुभ माना।।

सप्तम आत्म प्रवाद है भाई, कर्म प्रवाद अष्टम सुखदायी।
नौवा प्रत्याख्यान बताया, विद्यानुवाद दशम कहलाया।।
कल्याणवाद ग्यारहवाँ जानो, प्राणावाय बारहवाँ मानो।
क्रिया विशाल तेरहवाँ भाई, लोक बिन्दुसार अन्तिम गाई।।
ऋषभादिक चौबिस जिन गाये, वीर प्रभु अन्तिम कहलाए।
ॐकारमय श्री जिनवाणी, तीन लोक में है कल्याणी।।
गौतम गणधर ने उच्चारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
तीन हुए अनुबद्ध केवली, पाँच हुए फिर श्रुत केवली।।
फिर आचार्यों ने वह पाई, परम्परा यह चलती आई।
कलीकाल पञ्चम युग आया, अंग पूर्व का ज्ञान भुलाया।।
ज्ञाता अंगाश के शुभ भाई, धरसेन स्वामी बने सहाई।
भूतबली पुष्पदन्त बुलाए, षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखाए।।
धवलादिक टीका शुभकारी, श्रुत का साधन बना हमारी।
शुभ अनुयोग चार बतलाए, चतुर्गति से मुक्ति दिलाए।।
प्रथमानुयोग प्रथम कहलाया, द्वितीय करुणानुयोग बताया।
चरणानुयोग तीसरा जानो, द्रव्यानुयोग चौथा पहिचानो।।
अनेकांतमय अमृतवाणी, स्याद्वाद मय श्री जिनवाणी।
जिसमें हम अवगाहन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ।।
सम्यक् श्रुत पा ध्यान लगाएँ, अनुपम केवलज्ञान जगाए।
'विशद' भावना है यह मेरी, मिट जाये भव-भव की फेरी।।

दोहा– श्रद्धा भक्ती से पढ़े चालीसा शुभकार।
लौकिक आध्यात्मिक सभी, पावे ज्ञान अपार।।
पच्चिस सौ सैंतीस यह, कहा वीर निर्वाण।
'विशद' भाव से यह किया, आगम का गुणगान।।

श्री णमोकार चालीसा

महामंत्र– णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा– **तीन लोक से पूज्य हैं अर्हतादि नव देव।**
मन वच तन से पूजते उनको विनत सदैव।।
णमोकार महामंत्र है काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ति जाप से, बनें जीव अर्हन्त।।

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।
पञ्चाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।

शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित्त दे दोष नशाते।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।
पञ्चमहाव्रत धारी जानो, पञ्चसमिति पाले मानो।।
पञ्चेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जापह्ह ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा- वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।।
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

श्री सम्भवनाथ चालीसा

दोहा- **पञ्च परमेष्ठी लोक में, अतिशय रहे महान्।**
सम्भव जिन तीर्थेश का, करते हम गुणगान।।

(चौपाई)

सम्भव जिन शुभ करने वाले, भविजन का दुःख हरने वाले।
जो अनुपम महिमा धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
गुण गाने के भाव बनाए, जिन चरणों से प्रीति लगाए।
देवों के भी देव कहाए, शत् इन्द्रों से पूज्य बताए।।
श्रेष्ठ दिगम्बर मुद्रा धारे, कर्म शत्रु प्रभु सभी निवारे।
मोह विजय तुमने प्रभु कीन्हा, उत्तम संयम मन से लीन्हा।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र पावन शुभकारी।
आर्य खण्ड जिसमें बतलाया, भारत देश श्रेष्ठ शुभ गाया।।
श्रावस्ती नगरी है प्यारी, सुखी सभी थी जनता सारी।
भूप जितारी जी कहलाए, रानी आप सुसीमा पाए।।
स्वर्गों से चयकर प्रभु आए, सारे जग के भाग्य जगाये।
फाल्गुन सुदी अष्टमी जानो, मंगलमय ये तिथि पहचानो।।
सम्भव जिनवर गर्भ में आए, रत्नदेव तब कई वर्षाये।
छह महिने पहले से भाई, हुई रत्नवृष्टि सुखदायी।।
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा गाई, पावन हुई जन्म से भाई।
इन्द्र कई स्वर्गों से आए, बालक का अभिषेक कराए।।
पग में अश्व चिह्न शुभ पाया, इन्द्र ने प्रभु पद शीश झुकाया।
सम्भवनाथ नाम बतलाया, जिन गुण गाकर के हर्षाया।।
जन्म से तीन ज्ञान प्रभु पाए, अतः त्रिलोकीनाथ कहाए।
साठ लाख पूरब की भाई, आयु जिनवर की बतलाई।।
धनुष चार सौ थी ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का था भाई।
अश्विन सुदी पूनम दिन आया, प्रभु ने संयम को अपनाया।।

केशलुंच कर दीक्षा धारी, महाव्रती बन के अविकारी।
देव कई लौकान्तिक आए, श्रेष्ठ प्रशंसा कर हर्षाए।।
देवों ने तब हर्ष मनाया, प्रभु के पद में शीश झुकाया।
पूजा करके प्रभु गुण गाए, जयकारों से गगन गुँजाए।।
स्वर्ण पेटिका दिव्य मँगाई, उसमें केश रखे शुभ भाई।
देव पेटिका हाथ सम्हाले, क्षीर सिन्धु में जाकर डाले।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, निज स्वभाव में निज को पाया।
कार्तिक वदी चौथ प्रभु पाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, गंधकुटी अतिशय बनवाए।
प्रातिहार्य जिसमें प्रगटाए, कमलासन अतिशय बनवाए।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, गणधर आदि चरण में आए।
बारह सभा लगी मनहारी, दिव्य ध्वनि पाई शुभकारी।।
श्रावक कई चरणों में आए, भिन्न-भिन्न वह पूज रचाए।
मनवांछित फल वह सब पाए, अपने जो सौभाग्य जगाए।।
प्रभु सम्मेदशिखर पर आए, शाश्वत तीर्थराज कहलाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि कीन्हें, निज स्वभाव में दृष्टि दीन्हें।।
धवल कूट है मंगलकारी, ध्यान किए जाके त्रिपुरारी।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, एक माह निज में चित्त दीन्हें।।
चैत्र सुदी षष्टी को स्वामी, बने कर्म नश शिवपथ गामी।
एक समय में शिवपद पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।
हम यह नित्य भावना भाते, प्रभु पद अपने हृदय सजाते।
जिस पद को प्रभुजी तुम पाए, वह पद पाने पद में आए।
इच्छा पूर्ण करो हे स्वामी, तव चरणों में विशद नमामि।।
जागें अब सौभाग्य हमारे, कट जाएँ भव-बन्धन सारे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, प्रतिदिन चालीस बार।
पढ़ने से शांति मिले, मन में अपरम्पार।।
स्वजन मित्र मिलकर सभी, करते हैं सहयोग।
इस भव में शांति 'विशद', परभव शिव का योग।।

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुहूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदायी।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।

गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे दुःख पाए, अन्त में भव से मोक्ष सिधाए।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैंवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

***

श्री मल्लिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, चौबिस जिन के साथ।
मल्लिनाथ जिनराज पद, विनत झुकाते माथ।।

चौपाई

मल्लिनाथ जिनराज कहाए, संयम पाके शिवसुख पाए।
प्रभु है वीतरागता धारी, सारे जग में मंगलकारी।।
अपराजित से चय कर आये, चैत्र शुक्ल एकम तिथि गाए।
मिथला के नृप कुम्भ कहाए, प्रजावति के गर्भ में आए।।
इक्ष्वाकु नन्दन कहलाए, कलश चिह्न पहिचान बताए।
अश्विनी नक्षत्र श्रेष्ठ बतलाए, प्रातःकाल का समय कहाए।।
मगसिर शुक्ला ग्यारस गाए, जन्म प्रभु मल्लि जिन पाए।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग तन का है भाई।।
तड़ित देख वैराग्य समाया, प्रभु ने सद् संयम को पाया।
इन्द्र पालकी लेकर आए, उसमें प्रभु जी को बैठाए।।
इन्द्र पालकी जहाँ उठाते, नरपति तव आगे आ जाते।
मानव लेकर आगे बढ़ते, देव गगन में लेकर उड़ते।।
मगशिर शुक्ला ग्यारस पाए, प्रभुजी केवलज्ञान जगाए।
श्रेष्ठ मनोहर वन शुभ पाया, तरु अशोक वन अनुपम गाया।।
समवशरण शुभ देव रचाए, त्रय योजन विस्तार कहाए।
वैशाख कृष्ण दशमी को भाई, प्रभु ने जिनवर दीक्षा पाई।।
पौर्वाह्न का समय बताया, षष्ठम भक्त प्रभु ने पाया।
शालि वन में पहुँचे स्वामी, तरु अशोक तल में शिवगामी।।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
वरुण यक्ष प्रभु का शुभ गाया, यक्षी पद विजया ने पाया।।

पचपन सहस्र वर्ष की भाई, प्रभु की शुभ आयु बतलाई।
गणधर शुभ अट्ठाइस बताए, गणी विशाख पहले गाए।।
साढ़े पाँच सौ पूरब धारी, उन्तिस सहस्र शिक्षक अविकारी।
बाईस सौ अवधिज्ञानी गाए, चौदह सौ वादी बतलाए।।
उन्तिस सौ विक्रिया के धारी, बाईस सौ केवली मनहारी।
सत्रह सौ पचास मुनि गाए, मनःपर्ययज्ञानी बतलाए।।
पचपन सहस्र आर्यिका भाई, मधुसेना गणिनी बतलाई।
एक लाख श्रावक कहलाए, चालिस सहस्र मुनि सब गाए।।
योग रोधकर ध्यान लगाए, एक माह का समय बिताए।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी जानो, गिरि सम्मेद शिखर पर मानो।।
भरणी शुभ नक्षत्र बताया, प्रभु ने मुक्ति पद शुभ पाया।
सायंकाल रहा शुभकारी, गौधूलि बेला मनहारी।।
तीर्थंकर पद पाके स्वामी, बने मोक्षपद के अनुगामी।
महा मनोहर मुद्राधारी, जिनबिम्बों की शोभा न्यारी।।
भावसहित जो पूजें ध्यावें, वे अपने सौभाग्य बढ़ावें।
यश कीर्ति बल वैभव पावें, ओज तेज कांति उपजावें।।
सर्वमान्य जग पदवी पावें, रण में विजयश्री ले आवें।
हों अनुकूल स्वजन परिवारी, सेवक होंवे आज्ञाकारी।।
अर्चा के शुभ भाव बनाएँ, चरण-शरण में हम भी आएँ।
शांतिमय हो जगती सारी, यही भावना रही हमारी।।
जब तक हम शिवपद न पाएँ, चरण आपके हृदय सजाएँ।
'विशद' भाव से तव गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
पढ़े सुने जो भाव से, तीनों योग सम्हार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, बढ़े पुण्य का कोष।
अन्तिम शिव पदवी मिले, जीवन हो निर्दोष।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
प्रभु हैं जन-जन के हितकारी, ज्ञानी ध्यानी जग उपकारी।।
तीन काल तिय जग के ज्ञाता, जन-जन का प्रभु तुमसे नाता।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, नर जीवन का सार बताया।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुःख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शैरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर-नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, सची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालीस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।

कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोइ अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।
ऊँगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम-रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।
कृष्ण ने तब की मायाचारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।।

नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलबाया।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।
राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया ! वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
सौख्य अनन्त प्रभु ने पाया, नर जीवन का सार बताया।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, विनय भाव के साथ जो।।

सोरठा– शांति मिले विशेष, रोग शोक चिंता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

***

श्री पदमप्रभु चालीसा

दोहा– **परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।**
चालीसा जिन पदम का, गाते अपरम्पार।।

चौपाई

जय–जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।
शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र–शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रैवयक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात–पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस तिथि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।

उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस–पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुःखियों के सारे दुःख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें–सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
निज आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।
बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छदमस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।

दोहा– **चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।**
'विशद' भाव से जो पढ़े, पावें शांति अपार।।

***

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभु के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू –छन्द) *तर्ज– आल्हा*

भव दुःख से संतप्त मरुस्थल, में यह भटक रहा संसार।
चन्द्र प्रभु की छत्र छाँव में, आश्रय मिलता है शुभकार।।
जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।1।।
महिषी जिनकी वही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।
इक्ष्वाकु वंश आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।2।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्रि थी मनहार।
देव–देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।3।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देखके इन्द्र बोला नाम।
चन्द्र प्रभु की जय बोली फिर, चरणों में कीन्हा विशद प्रणाम।।
बढ़ने लगे प्रभु नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयु लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभु भगवान।।4।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक के समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभु को निज का भान।।
मार्ग शीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।5।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।

साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।6।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
भादों शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभु, ने पाया पद निर्वाण।।7।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौवाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ति में रहते अनुरक्त।।8।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
शिव को भोग खिलाऊँगा मैं, राजा से वह बोले आन।।
छुपकर उत्तम भोजन खाया, हुआ व्याधि का पूर्ण विनाश।
पता चला राजा को जब तो, राजा मन में हुआ उदास।।9।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।।10।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय–जयकार।
सोनागिर में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
टोंक जिला के मैंदवास में, प्रकट हुए भूमि से नाथ।
जयपुर में बैनाड़ क्षेत्र पर, भक्त झुकाते चरणों माथ।।11।।
नगर–नगर के मंदिर में प्रभु, शोभित होते हैं अविकार।
पूजा आरति वन्दन करते, भक्त चरण में बारम्बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख–शांतिमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।।12।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख–शांति आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।

श्री शीतलनाथ चालीसा

दोहा

नमन करें अरहंत को, करें सिद्ध का ध्यान।
आचार्योपाध्याय साधु का, करें विशद गुणगान।।
जैनागम जिनधर्म शुभ, जिन मंदिर नवदेव।
शीतलनाथ जिनेन्द्र को, वन्दूँ विनत सदैव।।

(चौपाई)

आरण स्वर्ग से चय कर आये, माहिलपुर को धन्य बनाए।
जय-जय शीतल नाथ हमारे, भव-भव के दुःख नाशन हारे।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।
दृढ़रथ नृप के पुत्र कहाए, मात सुनन्दा प्रभु की गाए।।
गर्भोत्सव तव इन्द्र मनाए, रत्न वृष्टि करके हर्षाए।।
क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, जन्मोत्सव पर न्हवन कराए।।
आयु लाख पूर्व की जानो, कल्प वृक्ष लक्षण पहिचानो।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, महिमा जिनकी कही न जाई।।
पद युवराज आपने पाया, कई वर्षों तक राज्य चलाया।
हिम का नाश देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।
केशलोंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर प्रभु अविकारी।
पंच महाव्रत प्रभु ने पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
संयम तप धारण कर लीन्हें, संवर और निर्जरा कीन्हें।
कर्म घातिया प्रभु जी नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
इन्द्र अनेकों चरणों आये, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
पूजा कीन्हीं मंगलकारी, अतिशय हुए वहाँ पर भारी।।

समवशरण तव देव बनाए, प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए।
गणधर रहे सतासी भाई, जिनकी महिमा है अधिकाई।।
कुन्थु गणधर प्रथम कहाए, चार ज्ञान के धारी गाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्य जीव सुनने को आए।।
गणधर झेले जिसको भाई, सब भाषा मय सरल बनाई।
सम्यक् दर्शन पाए प्राणी, सुनकर श्री जिनवर की वाणी।।
कुछ लोगों ने संयम पाया, मोक्ष मार्ग उनने अपनाया।
गगन गमन करते थे स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।।
स्वर्ण कमल पग तल में जानो, देव श्रेष्ठ रचते थे मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, योग रोधकर ध्यान लगाए।।
विद्युतवर शुभ कूट कहाए, जिसकी महिमा कही न जाए।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पिछानो।।
इक साधु के संग में भाई, शीतल जिन ने मुक्ति पाई।
विशद भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पथ को तुमने अपनाया, मेरे मन में पथ वह भाया।
इसी राह पर हम बढ़ जाएँ, उसमें कोई विघ्न न आएँ।।
साहस बढ़े हमारा स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।
शिव पदवी को हम भी पाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़े, होवे भव से पार।।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाशकर शीघ्र ही, उसका हो निर्वाण।।

***

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।।
आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातःकाल का समय बिताए।।
फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाका गया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिह्न पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
माघ शुक्ल की चौथ बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।
अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।।

गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।।
फाल्गुन कृष्ण पञ्चमी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्र बताईं।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर में प्रभु के मानो।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।।
सुख–शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
रत्नत्रय पा कर्म नशाए, शीघ्र विभव से मुक्ति पाए।।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।
भव सागर में नहीं भ्रमाएँ, शिवपद पाके शिवसुख पाएँ।।

दोहा– चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांति विशद, बनते शिवपति ईश।।

श्री पुष्पदन्त चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण–कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय–जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिताश्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।
प्रातःकाल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिह्न प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प शुभ गाया, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।

समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
अश्विन शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख–शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष–हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांति आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभु हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीष झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभु तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभु की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमीं नाशा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन शुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आईं, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तव मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिह्न दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।
उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभु के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभु जी को पधराए।
भूपति कई प्रभु को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभु ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
वेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभु अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आईं।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभु सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी वारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनि अरिष्ट गृह जिन्हें सताए, मुनिसुव्रत जी शांति दिलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पा जाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा

परमेष्ठी के पद युगल, करते विशद प्रणाम।
नेमिनाथ का भाव से, ले सुखकारी नाम।।

(चौपाई छन्द)

नेमीनाथ दया के सागर, करुणाकर हे ज्ञान ! उजागर।
सुर नर जिनको वन्दन करते, ऐसे प्रभु जग के दुख हरते।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी प्यारी, प्रभु जी आप हुए अवतारी।
राजा समुद्र विजय के घर में, रानी शिवादेवी के उर में।।
अपराजित से च्युत हो आये, शौरीपुर नगरी को पाए।
श्रावण शुक्ला षष्ठी आई, शौरीपुर में जन्में भाई।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर–नर पशु मन में हर्षाए।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, शची ने प्रभु को गोद बिठाया।।
माया मय शिशु वहाँ लिटाया, माता ने कुछ जान न पाया।
क्षीर सिंधु से जल भर लाये, वसु योजन के कलश भराये।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराये, इन्द्रों ने तव चँवर ढुराये।
शंख चिन्ह दाएँ पग पाया, नेमिनाथ सुर नाम सुनाया।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण प्रभु तन का पाया, जग को अतिशय खूब दिखाया।।
नारायण बलदेव से भाई, आन मिले जो हैं अधिकाई।
कौतूहल वश बात ये आई, शक्ति किसमें अधिक है भाई।।
कोई वीर बलदेव को कहते, कोई कृष्ण की हामी भरते।
कोई शम्भू नाम पुकारें, कोई अनिरुद्ध के देते नारे।।
नेमीनाथ का नाम भी आया, कुछ लोगों को नहीं ये भाया।

ऊगली कनिष्ठ मोड़ दिखलाई, सीधी करे जो वीर है भाई।।
सब अपनी शक्ति अजमाए, कोई सीधी न कर पाए।
हार मान योद्धा सिरनाये, श्री कृष्ण मन में घबड़ाए।।
राज्य छीन न लेवे भाई, कृष्ण ने युक्ति एक लगाई।
जल क्रीड़ा की राह दिखाई, पटरानी कई साथ लगाई।।
नेमी जामवती से बोले, भाभी मेरी धोती धो ले।
भाभी ने तब रौब जमाया, मैंने पटरानी पद पाया।।
तुम भी अपना ब्याह रचाओ, रानी पा धोती धुलवाओ।
मेरे पति चक्र के धारी, शंख बजाते विस्मयकारी।।
तुमको जरा लाज नहिं आई, हमसे छोटी बात सुनाई।
रोम–रोम प्रभु का थर्राया, उनको सहन नहीं हो पाया।।
आयुधशाला पहुँचे भाई, शैया नाग की प्रभु बनाई।
पैर की ऊँगली को फैलाया, उस पर रख कर चक्र चलाया।।
पीछे हाथ में शंख उठाया, नाक के स्वर से उसे बजाया।
उससे तीन लोक थर्राया, श्री कृष्ण का मन घबड़ाया।।
जाकर भाई को समझाया, उनके मन को धैर्य दिलाया।
शादी की तब बात चलाई, जूनागढ़ पहुंचे फिर भाई।।
उग्रसेन से कृष्ण सुनाए, राजुल नेमि से परणाएँ।
उग्रसेन हर्षित हुए भारी, शीघ्र ब्याह की की तैयारी।।
श्री कृष्ण ने की होशियारी, नृप बुलवाए मांसाहारी।
नेमि दूल्हा बनकर आए, बाड़े में कई पशु रंभाए।।
करुणा से नेमि भर आए, पूछा क्यों यह पशु बंधाए।
इन पशुओं का मांस बनेगा, इन लोगों में हर्ष मनेगा।।
सुनते ही वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, गिरनारी जा दीक्षा धारे।।

राजुल सुनकर के घबड़ाई, दौड़ प्रभु के चरणों आई।
प्रभु को राजुल ने समझाया, नहिं माने तो साथ निभाया।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, बनी आर्यिका राजुल नारी।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, पद्मासन से ध्यान लगाए।।
सहस एक नृप दीक्षा धारे, द्वारावति में लिए आहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन पाया, वरदत्त ने यह पुण्य कमाया।।
अश्विन सुदि एकम् दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
सवशरण मिल देव बनाए, दिव्य देशना प्रभु सुनाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु ने पाए, वरदत्त उनमें प्रथम कहाए।
आषाढ़ शुक्ल आठें दिन भाई, ऊर्जयंत से मुक्ति पाई।।
हम भी उस पदवी को पाएँ, कर्म नाश कर मुक्ति पाएँ।।

सोरठा– चालीसा चालीस दिन में, जो पढ़ता 'विशद'।
चरण झुकाए शीश, रोग शोक चिंता मिटे ।।

***

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– अर्हत् सिद्धाचार्य शुभ, उपाध्याय जिन संत।
पार्श्व प्रभु के चरण में, नमन अनंतानंत।।

(तर्ज– नित देव मेरी आत्मा...)

जिनराज पारसनाथ स्वामी, लोक में पावन रहे।
संसार में जो भव्य जीवों, के तरण–तारण कहे।।
कर ध्यान आतम का प्रभु जी, नाश कर अज्ञान का।
अनुपम अलौकिक आपने, दीपक जलाया ज्ञान का।।1।।

कुँवर हैं अश्वसेन के जो, मात वामा जानिए।
नगर काशी के अधीपति, आप को पहिचानिए।।
शुभ दोज वदि वैशाख तिथि को, गर्भ में आये प्रभो !।
छह माह पहले से नगर में, हर्ष छाये थे विभो !।।2।।
तब रत्न वृष्टि दिव्य करके, देव हर्षाए अहा।
शुभ पोष कृष्ण एकादशी को, जन्म का उत्सव रहा।।
तब इन्द्र ऐरावत पे आके, प्रभो को भी ले गया।
शुभ न्हवन मेरु पर कराया, हुआ तव उत्सव नया।।3।।
शुभ नाग लक्षण दाएँ पद में, इन्द्र ने देखा तभी।
तब नाम पारस बोलकर, जयकार शुभ कीन्हें सभी।।
युवराज पारस सैर करने को, सघन वन में गये।
जाके वहाँ देखे प्रभु में, विशद कई अचरज नये।।4।।
पञ्चाग्नि तप में जीव जलते, देखकर प्रभु ने कहा।
रे तापसी ! जीवों को अग्नि, में जलाता जा रहा।।
लेकर कुल्हाड़ी तापसी ने, लक्कड़े फाड़े सभी।
अध जले तब नाग निकले, लक्कड़ों से वह सभी।।5।।
नवकार नागों को सुनाया, प्रभु ने यह जानिए।
धरणेन्द्र व पद्मावति हुए, आप यह सच मानिए।।
संसार की यह दशा लखकर, प्रभु संयम धर लिए।
तब पौष एकादशी कृष्णा, सब परिग्रह तज दिए।।6।।
धनदत्त के गृह क्षीर का, आहार प्रभु पारस लिये।
देवों ने आकर पञ्च आश्चर्य, उस समय आकर किये।।
जब सघन वन में ध्यान करते, थे प्रभु यह मानिए।
तब धूमकेतु देव ने, उपसर्ग कीन्हा मानिए।।7।।

की धूल अग्नि पत्थरों की, वृष्टि आके देव ने।
तब ध्यान आतम का किया था, पार्श्व प्रभु जिनदेव ने।।
अहिक्षेत्र में यह हुई घटना, आप यह सुन लीजिए।
जिन पार्श्व प्रभु का वहाँ जाकर, आप दर्शन कीजिए।।8।।
उपसर्ग वह धरणेन्द्र, पद्मावति ने टाला तभी।
जयकार करने लगे सुर-नर, प्रभु की आके सभी।।
शुभ चैत कृष्णा चौथ प्रभु जी, ज्ञान केवल पा लिए।
तव इन्द्र आये सौ वहाँ पर, ढ़ोक चरणों में दिए।।9।।
कर समवशरण रचना निराली, महत् उत्सव भी किया।
ॐकार ध्वनि में पार्श्व ने, संदेश मुक्ति का दिया।।
सम्मेदगिरि पहुँचे वहाँ से, मोक्ष पाए जिन प्रभो !।
श्रावण सुदी साते को जिनवर, पा गये शिवपद विभो !।।10।।
है प्रार्थना इतनी प्रभु, अब शरण हमको दीजिए।
हे नाथ ! अपने भक्त को भी, आप सा कर लीजिए।।
विश्वास है इतना प्रभु न, भक्त को ठुकराओगे।
अतिशीघ्र मुक्तिपथ दिखाकर, सिद्धि तुम दिलवाओगे।।11।।
जिनबिम्ब जग में पार्श्व प्रभु के, छाए हैं कई श्रेष्ठतम।
शुभ दर्श करके पार्श्व जिन का, नाश होता मोहतम।।
हम भावना भाते स्वयं, जिनदेव का दर्शन मिले।
मेरे हृदय में पुष्प श्रद्धा, का विशद अनुपम खिले।।12।।

दोहा- चालीसा जिन पार्श्व का, पढ़े जो चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, होय विशद भव पार।।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

***

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा- नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
भक्ति करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ति पद के भाव से, लिखते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।
नगर अयोध्या रहा महान्, नृपति संवर जिसका जान।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।
बेला प्रत्यूष रही प्रधान, पुनर्वसू नक्षत्र महान।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभु गर्भ कल्याण।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।
पुनर्वसु नक्षत्र प्रधान, राशि स्वामी बुध पहिचान।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।
पचास लाख पूरब की जान, आयु पाये जिन भगवान।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसु नक्षत्र महान्।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु बयालिस सौ उच्च महान्।।

सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान्।
दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर खीर का प्रभु मनहार।।
नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।
पौष शुक्ल चौदस दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष।।
गणधर एक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तव हम माथ।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।
भक्ति करे भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाए माथ।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ति पद पाए शुभकार।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, उसका हो उद्धार।।
सुख-शांति सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावे निर्वाण।।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।
हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।

ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।
कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

श्री विमलनाथ चालीसा

दोहा- पञ्च परम परमेष्ठि को, वन्दन बारम्बार।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद अनगार।।
पूज्य हुए हैं लोक में, विमलनाथ भगवान।
भक्ति भाव से हम यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, भरत क्षेत्र जिसमें शुभकारी।
अंगदेश जिसमें शुभ गाया, नगर कम्पिला श्रेष्ठ बताया।।
राजा कृतवर्मा शुभ गाये, जैनधर्म धारी कहलाए।
जयश्यामा जिनकी महारानी, जिनकी नहीं है कोई शानी।।
वंश इक्ष्वाकु जिनका गाया, जो इस जग में श्रेष्ठ बताया।
ज्येष्ठ वदी दशमी शुभकारी, प्रातःकाल की बेला प्यारी।।
शुभ नक्षत्र आपने पाया, उत्तरा भाद्रपद नाम बताया।
सहस्रार से चयकर आये, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
माघ कृष्ण की चौथ बताई, मीन राशि अतिशय शुभ गाई।
बृहस्पति राशि का स्वामी, पाये हैं जिन अन्तर्यामी।।
तप्त स्वर्ण सम तन शुभ पाए, उससे भी न नेह लगाए।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, सूकर लक्षण जानो भाई।।
वर्ष साठ लख आयु पाए, जग के भोग तुम्हें न भाए।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।।
शुक्ला माघ चतुर्थी जानो, सन्ध्याकाल श्रेष्ठ पहिचानो।
चलकर देव स्वर्ग से आए, साथ पालकी अपने लाए।।
उसमें प्रभु जी को बैठाए, सहस्राभ वन चलकर आये।
जम्बू वृक्ष रहा शुभकारी, जिसके नीचे दीक्षा धारी।।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास आपने कीन्हे, शुभ क्षीरान्न आहार में लीन्हे।।
नृपति कनक प्रभ अनुपम गाया, आहारदाता जो कहलाया।
चन्दनपुर नगरी शुभकारी, रही पारणा नगरी प्यारी।।

उत्तम संयम प्रभु जी पाए, तप से अपने कर्म नशाए।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।
इन्द्र वहाँ चलकर के आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
चरणों आकर ढोक लगाए, समवशरण रचना करवाए।।
छह योजन विस्तार बताया, जिसमें प्रभुजी को बैठाया।
पद्मासन से बैठे स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।।
केवलज्ञानी अनुपम गाए, साढ़े पाँच सहस्र बतलाए।
ग्यारह सौ थे पूरब धारी, समवशरण में मुनि अविकारी।।
साढ़े अड़तिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्ययज्ञानी, रहे पाँच सौ ज्ञानी ध्यानी।।
मुनि बानवे सौ अविकारी, रहे विक्रिया ऋद्धीधारी।
अड़तालिस सौ अवधिज्ञानी, आगम वर्णित संख्या मानी।।
वादी छत्तिस सौ बतलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए।
पचपन गणधर श्रेष्ठ बताए, गणधर प्रथम मंदरजी गाये।।
अड़सठ सहस मुनि अविकारी, साथ में प्रभु के थे शुभकारी।
एक लाख आर्यिकाएँ जानो, गणिनी प्रमुख पद्मश्री मानो।।
श्रावक शुभ दो लाख बताए, श्रोता प्रमुख स्वयंभू गाए।
यक्ष चतुर्मुख जानो भाई, यक्षी वैरोटी बतलाई।।
अनुबद्ध केवली चालिस गाए, पन्द्रह लाख वर्ष तप पाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहिले शिवगामी।।
अषाढ़ कृष्ण आठें शुभ जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, कूट सुवीर से मुक्ती पाई।।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, वीतराग दर्शाने वाले।
उनके शुभ दर्शन हम पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।

दोहा– चालीसा पढ़ते शुभम्, दिन में चालिस बार।
सुख शांति सौभाग्य पा, पाते भव से पार।।
विमलनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
यही भावना है 'विशद', होय शीघ्र निर्वाण।।

श्री अनन्तनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, वंदन बारम्बार।
अनन्तनाथ जिनराज का, चालीसा शुभकार।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
जिसमें कौशल देश बताया, नगर अयोध्या पावन गाया।।
राजा सिंहसेन कहलाए, इक्ष्वाकु वंशी शुभ गाए।
सर्वयशा रानी कहलाई, शुभ लक्षण से युक्त बताई।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर आये, पुष्पोत्तर विमान शुभ पाए।
चयकर माँ के गर्भ में आए, माता के सौभाग्य जगाए।।
ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, जन्म प्रभु पाये मनहारी।
राशि श्रेष्ठ मीन शुभ जानो, बृहस्पति स्वामी पहिचानो।।
तन का वर्ण स्वर्ण शुभ गाया, पग में सेही चिह्न बताया।
तीस लाख वर्षों की भाई, अनन्तनाथ ने आयु पाई।।
धनुष पचास रही ऊँचाई, श्री जिनेन्द्र के तन की भाई।
पन्द्रह लाख वर्ष का स्वामी, राजभोग पाए शिवगामी।।
उल्का पतन देखकर भाई, हो विरक्त शुभ दीक्षा पाई।
शुभ नक्षत्र रेवती गाया, सायंकाल का समय बताया।।
नगर अयोध्या अनुपम जानो, सागरदत्त पालकी मानो।
आप सहेतुक वन में आए, पीपल वृक्ष श्रेष्ठ शुभ पाए।।
दीक्षा वृक्ष की शुभ ऊँचाई, छह सौ धनुष शास्त्र में गाई।
एक हजार नृपति शुभ आए, दीक्षा प्रभु के साथ में पाए।।
केशलुंच कर दीक्षा धारे, अपने सारे वस्त्र उतारे।
दो उपवास आपने कीन्हे, फिर क्षीरान्न आप शुभ लीन्हे।।
नगर अयोध्या में शुभ जानो, नृपति विशाखराज पहिचानो।
आहारदाता जो कहलाया, उसने अनुपम पुण्य कमाया।।

वन उपवन में ध्यान लगाए, दो वर्षों का समय बिताए।
कृष्णा चैत अमावस जानो, केवलज्ञान तिथि पहचानो।।
इन्द्र कुबेर आदि शुभकारी, देव चरण में आये भारी।
समवशरण रचना करवाई, खुश हो जय-जयकार लगाई।।
साढ़े पाँच योजन का भाई, मणि रत्नों का है सुखदायी।
पाँच हजार केवली गाए, पूरबधारी सहस बताए।।
साढ़े पैंतिस सहस निराले, शिक्षक शिक्षा देने वाले।
विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, पाँच सहस्र कही जिनवाणी।।
तैंतालिस सौ अवधिज्ञानी, बत्तिस सौ वादी विज्ञानी।
आठ सहस ऋद्धि के धारी, छ्यासठ सहस मुनि अविकारी।।
गणधर श्रेष्ठ पचास बताए, गणधर श्री जय प्रथम कहाए।
किन्नर यक्ष रहा शुभकारी, यक्षी वैरोटी मनहारी।।
एक माह पहले जिन स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
गिरि सम्मेद शिखर शुभकारी, कूट स्वयंप्रभ है मनहारी।।
कृष्णा चैत अमावस जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
रेवती शुभ नक्षत्र बताया, आसन कायोत्सर्ग कहाया।।
एक हजार शिष्य शुभ गाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
शुभ अनुबद्ध केवली गाये, छत्तिस आगम में बतलाये।।
वीतराग जिनकी प्रतिमाएँ, भव्यों को शिवमार्ग दिखाएँ।
जिनबिम्बों के हम गुण गाते, नत हो सादर शीश झुकाते।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े सुने जो कोय।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य श्री, सुख समृद्धि होय।।
गुण अनन्त के कोष हैं, अनन्त नाथ भगवान।
उनकी अर्चा से मिले, 'विशद' शीघ्र निर्वाण।।

श्री धर्मनाथ चालीसा

दोहा- रहे पूज्य नव देवता, तीनों लोक महान्।
धर्मनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।।
चालीसा गाते यहाँ, भाव सहित शुभकार।
वन्दन करते पद युगल, जिन पद बारम्बार।।

(चौपाई)

लोकालोक रहा शुभकारी, मध्य लोक जिसमें मनहारी।
मध्य में जम्बूद्वीप बताया, भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया।।
जिसमें अंग देश है भाई, रत्नपुरी नगरी सुखदायी।
भानुराय जिसमें कहलाए, कुरू वंश के स्वामी गाए।।
कश्यप गोत्री जो कहलाए, महारानी सुव्रता जो पाए।
वैसाख शुक्ल त्रयोदशि जानो, प्रातःकाल समय पहिचानो।।
शुभ नक्षत्र रेवती पाए, चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाए, प्रभु जी माँ के गर्भ में आए।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
अतिशय जन्म प्रभुजी पाए, जन्म कल्याणक जो कहलाए।।
कर्क राशि का योग बताया, राशि स्वामी चन्द्र कहाया।
स्वर्ण वर्ण तन का है भाई, धनुष पैंतालिस है ऊँचाई।।
वर्ष लाख दश आयु पाए, वज्रदण्ड पहिचान कराए।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी।।
माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, पुष्य नक्षत्र रहा मनहारी।
दीक्षा नगर रत्नपुर गाया, सायंकाल का समय बताया।।
देव पालकी लेकर आये, नागदत्ता शुभ नाम बताए।
शालिवन उद्यान बताया, दीर्घपर्ण तरुवर कहलाया।।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।
एक सहस राजा भी आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।

दो उपवास आपने कीन्हें, शुभ क्षीरान्न बाद में लीन्हे।
धर्म मित्र दाता कहलाया, पाटलिपुत्र नगर शुभ गाया।।
एक वर्ष तप काल बताया, बाद में केवलज्ञान जगाया।
पौष शुक्ल पूनम शुभ जानो, संध्याकाल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज-चरणों में आया, धन कुबेर को साथ में लाया।
साथ में देव अन्य कई आए, समवशरण रचना बनवाए।।
पाँच योजन विस्तार बताया, पद्मासन प्रभु ने शुभ पाया।
साथ में केवलज्ञान जगाए, साढ़े चार सहस बतलाए।।
सात हजार विक्रियाधारी, नौ सौ पूरब धर अविकारी।
चालिस सहस सात सौ भाई, शिक्षक की संख्या बतलाई।।
चार हजार पाँच सौ जानो, मनःपर्यय ज्ञानी पहिचानो।
अवधि ज्ञानधारी मुनि आए, तीन सहस छह सौ बतलाए।।
दो हजार आठ सौ भाई, वादी मुनि संख्या बतलाई।
प्रभु के साथ मुनीश्वर आए, चौंसठ सहस पूर्ण कहलाए।।
गणधर तैंतालिस कहलाए, अरिष्ठसेन प्रथम गणि कहाए।
यक्ष किंपुरुष जानो भाई, अनन्तमति यक्षी कहलाई।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सुदत्तवर अनुपम गाए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह पहले शिवगामी।।
कायोत्सर्गासन प्रभु पाए, स्वामी प्रातः मोक्ष सिधाए।
चौथ ज्येष्ठ शुक्ला की जानो, मोक्ष कल्याणक की तिथि मानो।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर गाए, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
जिन प्रतिमाएँ हैं शुभकारी, वीतराग मुद्रा अविकारी।।
दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
प्रभु की महिमा है शुभकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें सुने जो लोग।
सुख शांति सौभाग्य का, मिले उन्हें संयोग।।
धर्मनाथ के चरण को, ध्याये जो गुणवान।
अल्प समय में ही, 'विशद' पावें वह निर्वाण।।

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा जिन कुन्थु का, गाते हम शुभकार।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी पर गाया, जिसमें जम्बूद्वीप बताया।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, आर्य खण्ड की महिमा न्यारी।।
कुरुजांगल शुभ देश कहाया, नगर हस्तिनापुर शुभ गाया।
सूरसेन राजा कहलाए, कुरूवंश के स्वामी गाए।।
रानी श्रीमती शुभ गाई, धर्म परायण जानो भाई।
श्रावण कृष्णा दशमी जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, गर्भ प्रभु ने जिसमें पाया।
चयकर सर्वार्थ सिद्धि से आये, आप वहाँ अहमिन्द्र कहाए।।
सुदि एकम वैशाख कहाए, जन्म प्रभु कुन्थु जिन पाए।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, आग्नेय शुभ योग कहाया।।
वृषभ राशि पाए शुभकारी, स्वामी शुक्र रहा मनहारी।
इन्द्रराज तब स्वर्ग से आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
ऐरावत स्वर्गों से लाए, प्रभु जी को उस पर बैठाए।
पाण्डुक शिला पे लेकर आए, क्षीर नीर से न्हवन कराए।।
बकरा चिह्न पैर में पाया, स्वर्ण रंग तन का शुभ गाया।
सहस पञ्चानवे आयु पाई, पैंतिस धनुष रही ऊँचाई।।
जाति स्मरण करके स्वामी, बने मुक्ति पथ के अनुगामी।
सुदि एकम वैसाख बताई, संध्याकाल में दीक्षा पाई।।
विजया देव पालकी लाए, उस पर प्रभुजी को बैठाए।
आप सहेतुक वन में आए, तिलक वृक्ष तल दीक्षा पाए।।
चार सौ बीस धनुष ऊँचाई, दीक्षा तरू की जानो भाई।
प्रभु ने तेला के व्रत कीन्हे, सहस भूप सह दीक्षा लीन्हे।।

नगर हस्तिनापुर के स्वामी, अपराजित राजा थे नामी।
पड़गाहन प्रभु का शुभ कीन्हे, क्षीरान्न शुभ आहार में दीन्हे।।
तप में सोलह वर्ष बिताए, फिर प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चैत्र शुक्ल तृतिया शुभ जानो, अपराह्न काल समय शुभ मानो।।
इन्द्र राज स्वर्गों से आए, धनपति इन्द्र साथ में लाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, चार योजन विस्तार कहाए।।
समवशरण में आसन भाई, पद्मासन प्रभु की बतलाई।
बत्तिस सहस केवली गाए, सात सौ पूरवधारी आए।।
पैंतिस सौ मनःपर्यय ज्ञानी, ढाई सहस थे अवधि ज्ञानी।
इक्यावन सौ विक्रिया धारी, दो हजार वादी अविकारी।।
साठ सहस कुल साधु जानो, समवशरण की संख्या मानो।
प्रभु के पैंतिस गणधर गाए, प्रथम स्वयंभू जी कहलाए।।
यक्ष श्रेष्ठ गन्धर्व था भाई, यक्षी जयादेवी बतलाई।
श्री सम्मेद शिखर पर आए, कूट ज्ञानधर प्रभु जी पाए।।
एक माह पहले से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।
सुदि एकम वैशाख बताई, सायंकाल में मुक्ति पाई।।
कृतिका शुभ नक्षत्र बताया, कायोत्सर्गासन शुभ गाया।
सहस मुनि सह मुक्ति पाए, चौबिस अनुबद्ध केवली गाए।।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर पदवी शुभ पाए।
आप हुए त्रयपद के धारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।।
सत्तरहवें तीर्थंकर गाये, जग को मुक्ति मार्ग दिखाए।
महिमा 'विशद' आपकी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

दोहा– कुन्थुनाथ भगवान का, चालीसा शुभकार।
पढ़े सुने जो भाव से, पावे भवदधि पार।।
चालीसा चालिस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांति सौभाग्य पा, बने श्री का नाथ।।

श्री नमिनाथ चालीसा

दोहा– नव देवों के चरण में, नव कोटि के साथ।
गुण गाते नमिनाथ के, चरण झुकाकर माथ।।
तव चरणों में हे प्रभु, जोड़ रहे द्वय हाथ।
चालीसा गाते यहाँ, विनय भाव करे साथ।।

(चौपाई)

मध्य लोक पृथ्वी का जानो, जिसमें जम्बूद्वीप बखानो।
भरत क्षेत्र जानो शुभकारी, दक्षिण में सोहे मनहारी।।
वंगदेश जानो शुभ भाई, मिथिला नगरी शुभ कहलाई।
विजयराज राजा शुभ गाए, वंश इक्ष्वाकु अनुपम पाए।।
वप्रिला रानी जिनकी गाई, धर्म परायण जो कहलाई।
अश्विन वदी दूज शुभ जानो, पिछला पहर रात का मानो।।
शुभ नक्षत्र अश्विनी पाए, कश्यप गोत्री आप कहाए।
अपराजित से चयकर आए, माँ के गर्भ को धन्य बनाए।।
दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, शुभ नक्षत्र स्वाति पहिचानो।
जन्म मेष राशि में पाया, राशि स्वामी मंगल गाया।।
घंटा नाद हुआ तब भारी, देवलोक में अतिशयकारी।
स्वयं इन्द्र ऐरावत लाया, सुर परिवार साथ में आया।।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, जन्म कल्याणक श्रेष्ठ मनाया।
नीलकमल शुभ लक्षण जानो, स्वर्ण वर्ण तन का पहिचानो।।
दस हजार वर्षों की स्वामी, आयु पाये हैं शिवगामी।
सम चतुरस्र तन पाए भाई, पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई।।
सहस्राष्ट लक्षण शुभकारी, रक्त श्वेत जानो मनहारी।
जाति स्मरण प्रभु को आया, मन में तव वैराग्य समाया।।

दशें कृष्ण आषाढ़ की जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।
मिथिला नगरी श्रेष्ठ बताई, उत्तर कुरु पालकी गाई।।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, चम्पक वृक्ष श्रेष्ठ बतलाया।
एक सौ अस्सी धनुष ऊँचाई, दीक्षा वृक्ष की जानो भाई।।
एक सहस राजा संग आये, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
दो उपवास प्रभु जी कीन्हें, शुभ क्षीरान्न आहार जो लीन्हें।।
नगर वीरपुर अनुपम गाया, दाता राजा दत्त कहाया।
मगसिर शुक्ल एकादशि जानो, संध्याकाल समय पहिचानो।।
प्रभु जी मिथिला नगरी आए, अतिशय केवलज्ञान जगाए।
शुभ उद्यान जैत्र वन गाया, मौलश्री शुभ तरु कहलाया।।
समवशरण आ देव बनाए, दो योजन विस्तार कहाए।
शुभ पद्मासन प्रभु का जानो, सोलह सौ केवली पहिचानो।।
संघ में साधु संख्या भाई, बीस हजार श्रेष्ठ बतलाई।
गणधर संख्या सत्रह जानो, सुप्रभ प्रथम वाणी पहिचानो।।
एक लाख श्रावक भी आए, विजय प्रमुख श्रोता कहलाए।
यक्ष कहा विद्युतप्रभ भाई, चामुण्डी यक्षी कहलाई।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, कूट मित्रधर अनुपम पाए।
एक माह पूरब से स्वामी, योग निरोध किए शिवगामी।।
वैशाख कृष्ण चतुर्दशी जानो, अंतिम पहर रात का मानो।
खड्गासन से मोक्ष सिधाए, सहस मुनि सह मुक्ति पाए।।
जिनवर का हम ध्यान लगाएँ, हृदय कमल पर उन्हें बिठाएँ।
हम भी मुक्ति पद को पाएँ, 'विशद' भावना उर से भाएँ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े-सुने उर धार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावें भव से पार।।
नमिनाथ भगवान का, करने से गुणगान।
आशा मन की पूर्ण हो, शीघ्र होय कल्याण।।

श्री गिरनारजी चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
तीन लोक में पूज्य है, तीर्थ क्षेत्र गिरनार।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
यही भावना है 'विशद', बढ़ें मोक्ष की ओर।।

(चौपाई)

जय-जय सिद्धक्षेत्र गिरनार, जिसकी महिमा अपरम्पार।
है सौराष्ट्र देश शुभकार, जूनागढ़ जिसमें मनहार।।
तीन कोश जाने के बाद, दरवाजा फिर नदी अगाध।
उत्तर दक्षिण पर्वत दोय, जिसमें बहता उज्ज्वल तोय।।
नदी मध्य कई कुण्ड सुजान, दोनों तट मंदिर पहिचान।
वैष्णव साधु के स्थान, भिक्षा वृत्ति वाले मान।।
एक कोश आगे को जाय, जल से पूरित नाला आय।
श्रावक जन करते स्नान, मृगी कुण्ड फिर आगे जान।।
वैष्णव के तीरथ स्थान, पूजा भक्ति करें प्रधान।
डेढ़ कोश आगे को जाय, फिर छोटे पर्वत को पाय।।
तीन कुण्ड है जहाँ महान्, युग मंदिर जिन के पहिचान।
दो मंदिर जिनवर के जान, श्वेताम्बर के बहुत प्रमाण।।
बनी धर्मशाला शुभकार, जल का कुण्ड है अपरम्पार।
दर्शन करके आगे जाय, द्वितिय टोंक का दर्शन पाय।।
मोक्ष गये अनिरुद्ध कुमार, चरण बने हैं अपरम्पार।
भक्त वंदना करते आन, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।
तृतिय टोंक का फिर स्थान, छतरी बनी है जहाँ महान्।
पाए मुक्ति शम्बुकुमार, पद में वन्दन बारम्बार।।
भक्त करें शुभ मंगलगान, नत हो पद पंकज में आन।
आगे चढ़े बनाके भाव, फिर मिलता है कठिन चढ़ाव।।

बनी है चौथी टोंक विशाल, चढ़के प्राणी हों बेहाल।
श्रावक फिर भी श्रद्धावान, चढ़के करते प्रभु गुणगान।।
मुक्ति गये प्रद्युम्न कुमार, बनकर के स्वामी अनगार।
आगे पञ्चम टोंक विशेष, मुक्ति गये श्री नेमि जिनेश।।
चरण बने प्रभु के शुभकार, जिनपद वन्दन बारम्बार।
छतरी वहाँ बनी थी खास, बिजली से हो गई विनाश।।
हरा भरा पर्वत मनहार, रहा लोक में अतिशयकार।
गिरि की महिमा का नहिं पार, भव सिन्धु से करें जो पार।।
ऊँचा पर्वत रहा महान्, नहीं तीर्थ है और समान।
तीर्थ वन्दना करके दास, करने आते पूरी आस।।
कर्मों का हो पूर्ण विनाश, पा जाएँ हम शिवपुर वास।
पच्चिस सौ सैंतिस निर्वाण, माघ शुक्ल तृतिया शुभमान।।
भक्त करें भक्ती शुभकार, पावें भक्ती का उपहार।
रहा आम्रवन जहाँ विशेष, दीक्षा धारे नेमि जिनेश।।
गिरि की महिमा का नहीं पार, माने सुर गुरु भी जब हार।
बत्तिस कोढ़ी मुनि सौ सात, कर्म घातिया कीन्हें घात।।
अविकारी बनके जिन संत, किए कर्म का अपने अन्त।
यात्री आकर के शुभ खास, बनते हैं चरणों के दास।।
पूजा वन्दन करे महान्, भक्ति अर्चा करें प्रधान।
भक्ती का पाके आधार, हो जाते हैं भव से पार।।
वन्दन करते बारम्बार, अब भव सिन्धु का पाने द्वार।
करते हैं जो प्रभु का जाप, उनके कटते हैं पाप।।

दोहा– चालीसा गिरनार का, गिर के ऊपर जाय।
भक्ति भाव से जो पढ़े, सुख–सम्पत्ती पाय।।
रोग–शोक का नाशकर, पावे सुन्दर देह।
'विशद' मोक्ष पद पायेगा, भक्त नहीं सन्देह।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
शांतिनाथ भगवान के, करते चरण प्रणाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने निज का धाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांतिजिन गाए ।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आये, रत्नवृष्टि तब देव कराए।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।
जन्म प्रभुजी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम बताया।
पञ्चम चक्रवर्ति कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।
सहस्र छियानवे रानी पाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।

एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।
आत्म ध्यान कीन्हें तव स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जगाई।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय-जयकार लगाए।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।
यक्ष गरुण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।
नो सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।
जग में कई जिनबिम्ब निराले, अतिशय श्रेष्ठ दिखाने वाले।।
अहार क्षेत्र वानपुर जानो, बीना बारहा भी पहिचानो।
रामटेक सीरोन कहाया, खजुराहो पचराई गाया।।
गाँव-गाँव में बिम्ब बताए, गिनती कहो कौन कर पाए।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोग-शोक दारिद्र नशाए।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावे, सुख-शांति सौभाग्य जगावे।
निज आतम का वैभव पावे, अनुक्रम से फिर शिवपुर जावे।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- अरहन्तों को नमन कर, सिद्धों को उर धार।
आचार्योपाध्याय साधु को, वन्दन बारम्बार।।
चैत्य-चैत्यालय धर्म जिन, आगम यह नवदेव।
शांतिनाथ के चरण में, वन्दन करूँ सदैव।।

(तर्ज - नित देव मेरी...)

शांति जिन की वन्दना जो, जीव करते हैं सभी।
सुख-शांति में रहते मगन, वह खेद न पाते कभी।।
प्रभु हैं दिगम्बर वीतरागी, शुद्ध हैं निर्दोष हैं।
प्रभु ज्ञान दर्शन वीर्य सुखमय, सद्गुणों के कोष हैं।।1।।
चयकर प्रभु सर्वार्थ सिद्धि, से यहाँ पर आए हैं।
विश्वसेन नृप के पुत्र माता, ऐरादेवी पाए हैं।।
जन्में हस्तिनागपुर में, वंश इक्ष्वाकु कहा।
भरणी शुभ नक्षत्र पाए, काल प्रातः का रहा।।2।।
माह भादों कृष्ण सातें, गर्भ में आए प्रभो।
स्वप्न सोलह मात देखे, नृत्य सुर कीन्हें विभो।।
ज्येष्ठ वदि चौदस प्रभु का, जन्म कल्याणक कहा।
इन्द्र ने लक्षण चरण में, हिरण शुभ देखा अहा।।3।।
चक्रवर्ती रहे पञ्चम, मदन बारहवें कहे।
प्रभु सोलहवे कहे जिन, स्वर्ण रंग के जो रहे।।
वर्ष इक लख श्रेष्ठ आयु, प्रभु की उत्तम कही।
धनुष चालिस श्रेष्ठ प्रभु के, तन की ऊँचाई रही।।4।।
जाति स्मरण से प्रभु, वैराग्य धारण कर लिए।
वैशाख शुक्ला तिथि एकम्, भक्त तृतिय जो किए।।
आम्रवन में नन्द तरु तल, में प्रभु दीक्षा धरे।
दीक्षा धरके सहस्र राजा, केश लुन्चन खुद करे।।5।।

गरुड प्रभु का यक्ष मानो, मानसी यक्षी कही।
शुभ हरिषेणा मुख्य प्रभु की, आर्यिका अनुपम रही।।
पौष शुक्ला तिथि दशमी, ज्ञानकेवल पाए हैं।
समवशरण तब देव आके, श्रेष्ठ शुभ बनवाए हैं।।6।।
व्यास साढ़े चार योजन, सभा का शुभ जानिए।
नगर हस्तिनागपुर में, ज्ञान पाए मानिए।।
एक महिने पूर्व से जो, योग का शुभ रोधकर।
ध्यान चेतन का लगाए, आत्मा का बोधकर।।7।।
गिरि सम्मेदाचल से मुक्ति, शांति जिनवर पाए हैं।
ज्येष्ठ कृष्णा तिथि चौदश, शिव गमन बतलाए हैं।।
भूप नौ सौ साथ में, मुक्तिश्री को पाए हैं।
काल प्रातः मोक्ष प्रभु श्री, शांति जिन का गाए हैं।।8।।
गणी छत्तिस शांति जिन के, वीतरागी जानिए।
प्रथम चक्रायुध गणी अति, श्रेष्ठतम शुभ मानिए।।
शांति जिन की अर्चना कर, शांति पाते हैं सभी।
ध्यान जो करते प्रभु का, वे दुःखी न हों कभी।।9।।
शांति जिन के बिम्ब जग में, कष्ट इस जग के हरें।
भक्त के गृह शांति जिनवर, शांति की वर्षा करें।।
शांति जिन के तीर्थ जग में, कई जगह पर छाए हैं।
शांति दाता शांति जिनवर, लोक में कहलाए हैं।।10।।
बानपुर आहार थूवौन, वीना खजुराहो कहा।
हस्तिनागपुर देवगढ़ अरु, रामटेक अतिशय रहा।।
भाव से जिन अर्चना कर, पुण्य का अर्जन करें।
शांति जिन का ध्यान करके, भव जलधि से हम तरें।।11।।

दोहा– चालीसा चालिस दिन, पढ़े जो चालीस बार।
'विशद' शांति सौभाग्य पा, पावे भव से पार।।

श्री महावीर चालीसा

दोहा– सिद्ध और अरिहंत का, है सुखकारी नाम।
आचार्योपाध्याय साधु के, करते चरण प्रणाम।।
वर्धमान सन्मति तथा, वीर और अतिवीर।
महावीर की वन्दना, से बदले तकदीर।।

चौपाई

जय–जय वर्धमान जिन स्वामी, शांति मनोहर छवि है नामी।
तीर्थंकर प्रकृति के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
पुरुषोत्तम विमान से आए, माँ को सोलह स्वप्न दिखाए।
राजा सिद्धारथ कहलाए, कुण्डलपुर के भूप कहाए।।
माता त्रिशला के उर आए, नाथ वंश के सूर्य कहलाए।
षष्ठी शुक्ल आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर के प्रभु आए।।
चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने जिस दिन पाया।
नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन जानो, अन्तिम पहर रात का मानो।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, पाण्डुक शिला पर न्हवन कराया।
प्रभु के पद में शीश झुकाया, पग में चिह्न शेर का पाया।।
वर्द्धमान तब नाम बताया, जयकारे से गगन गुँजाया।
पलना प्रभु का मात झुलाये, ऋद्धिधारी मुनिवर आए।।
मन में प्रश्न मुनि के आया, जिसका समाधान न पाया।
देख प्रभु को हल कर लीन्हा, सन्मति नाम प्रभु का दीन्हा।।
मित्रों संग क्रीड़ा को आए, सभी वीरता लख हर्षाए।
देव परीक्षा लेने आया, नाग का उसने रूप बनाया।।
भागे मित्र सभी भय खाये, किन्तु प्रभु नहीं घबराए।
पैर की ठोकर सिर में मारी, देव तभी चीखा अति भारी।।
उसने चरणों ढ़ोक लगाया, वीर नाम प्रभु का बतलाया।
युवा अवस्था प्रभु जी पाए, करके सैर नगर में आए।।
हाथी ने उत्पात मचाए, मद उसका प्रभु पूर्ण नशाए।
प्रभु अतिवीर नाम को पाए, सभी प्रशंसा कर हर्षाए।।

बाल ब्रह्मचारी कहलाए, तीस वर्ष में दीक्षा पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, तब मन में वैराग्य समाया।।
माघ कृष्ण दशमी दिन पाया, नक्षत्र उत्तरा फाल्गुन गाया।
तृतीय भक्त प्रभुजी पाए, दीक्षा धर एकाकी आए।।
स्वर्ण रंग प्रभु का शुभ पाया, सप्त हाथ अवगाहन पाया।
प्रभु नाथ वन में फिर आए, साल तरु तल ध्यान लगाए।।
कामदेव रति वन में आए, जग को जीता ऐसा गाए।
रति ने प्रभु का दर्शन पाया, कामदेव से वचन सुनाया।।
इन्हें जीत पाए क्या स्वामी, नग्न खड़े जो शिवपथ गामी।
प्रभु को ध्यान से खूब डिगाया, किन्तु उन्हें डिगा न पाए।।
कामदेव पद शीश झुकाया, महावीर तव नाम बताया।
दशें शुक्ल वैसाख बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
ऋजुकूला का तीर बताया, शाल वृक्ष वन खण्ड कहाया।
समवशरण इक योजन जानो, योग निवृत्ति अनुपम मानो।।
कार्तिक कृष्ण अमावस पाए, महावीर जिन मोक्ष सिधाए।
प्रातःकाल रहा शुभकारी, ग्यारह गणधर थे मनहारी।।
गौतम गणधर प्रथम कहाए, नाम इन्द्रभूति शुभ पाए।
गणधरजी ने ध्यान लगाया, सायं केवलज्ञान जगाया।।
प्रभु शासन नायक कहलाए, श्रेष्ठ सिद्धान्त लोक में छाए।
प्रतिमाएँ हैं अतिशयकारी, वीतरागमय मंगलकारी।।
चाँदनपुर महिमा दिखलाए, टीले में गौ दूध झराए।
ग्वाले के मन अचरज आया, उसने टीले को खुदवाया।।
वीर प्रभु के दर्शन पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
पावागिरि ऊन कहलाए, वहाँ भी कई अतिशय दिखलाए।।
यही भावना रही हमारी, जनता सुखमय होवे सारी।।
चरण कमल में हम सिर नाते, 'विशद' भाव से शीश झुकाते।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
पढ़ने से सुख–शांति हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

***

आचार्य श्री विशदसागरजी चालीसा

परमेष्ठी को नमन् कर, नव देवों के साथ।
लिखने का साहस करें, चरण झुकाएँ माथ।।
रोग–शोक का नाश कर, पाएँ मुक्ती धाम।
विशद सिंधु गुरुवर तुम्हें, शत्–शत् बार प्रणाम।।

चौपाई

चउ अनुयोगों के गुरु ज्ञाता, सूरी तुम जन–जन के त्राता।
भक्तों के तुम (गुरु) देव कहाते, श्रुत अमृत की धार बहाते।।
जय–जय छत्तिस गुण के धारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
भाव सहित तुमरे गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।।
नाथूरामजी पिता तुम्हारे, इंदर माँ की नयन के तारे।
छोड़ सभी झंझट संसारी, बन गए आप बाल ब्रह्मचारी।।
आठ नवम्बर बानवें आया, ब्रह्मचर्य व्रत तव अपनाया।
एक वर्ष तक रहे विरागी, संयम की मन में सुध जागी।।
स्वारथ का संसार है सारा, मिला न अब तक कोई सहारा।
दीन–हीन बालक को गुरुवर, कृपा कीजिये भव्य जानकर।।
ऐलक पद तुमने अपनाया, पाँचें मार्ग शीष सित पाया।
सन् उन्नीस सौ छियानवें आया, आठ फरवरी का दिन पाया।।
तन मन से हो गये अविकारी, जैसे हो चंदन की क्यारी।
भरत सिंधु के दर्शन पाये, तन मन में गुरु अति हर्षाये।।
श्री गुरुवर ने दिया सहारा, भव्यों का करने उद्धारा।
भक्तों को सद्ज्ञान सिखाओ, मोक्षमार्ग पर उन्हें बढ़ाओ।।
तुमको है आशीष हमारा, जीवन हो मंगलमय सारा।
गुरुवर मालपुरा में आए, सबने गुरु के दर्शन पाए।।
मन में हर्ष हुआ था भारी, गद्गद् हुई थी जनता सारी।
तेरह फरवरी का दिन पाया, दो हजार सन् पाँच कहाया।।
मुनिवर से आचार्य बनाया, गुरुवर की शुभ पाई छाया।
फिर गुरुवर से आशीष पाए, दीक्षा देकर शिष्य बनाए।।

एक मुनि दो क्षुल्लक भाई, उनने फिर शुभ दीक्षा पाई।
जग में जितने पद कहलाये, सारे ही निष्फल कहलाये।।
मोक्षमार्ग का पथ पा जाएँ, तव चरणों में हम शीश झुकाये।
ज्ञानवीर हो ध्यान वीर हो, मुनि श्रावक के महावीर हो।।
जीवन के आदर्श तुम्हीं हो, प्रेय श्रेय भगवंत तुम्ही हो।
क्षमामूर्ति गुरुदेव हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।।
वीतराग मुद्रा के धारी, तीन लोक में करुणाकारी।
जपने से गुरु नाम तुम्हारा, भव सिन्धु का मिले किनारा।।
दुनियाँ में नहिं कोई हमारा, दे दो गुरुवर हमें सहारा।
मात-पिता तुमको ही माना, परम ब्रह्म परमातम जाना।।
धर्म-कर्म के तुम हो ज्ञाता, सूरी तुम हो भाग्य विधाता।
जग में सबको सब कुछ देते, बदले में तुम कुछ न लेते।।
सरस्वती की है यह माया, होनहार विद्वान बनाया।
पञ्च महाव्रत पालन करते, दशधर्मों को जो आचरते।।
चिंतन मंथन अनुभव द्वारा, भक्तों का करते उद्धारा।
चरण शरण में जो भी आता, मन वांछित फल तब पा जाता।।
चरणों की रज है सुखकारी, दुख दरिद्रा की नाशन हारी।
तव भक्ती का मिला सहारा, कथन किया लघु शब्दों द्वारा।।
हम है दीन हीन संसारी, लिखने की क्या शक्ति हमारी।
भक्ति करने हम भी आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।।
भाव समर्पित करने आए, नहीं भेंट में कुछ भी लाए।
'आस्था' भाव समर्पित करते, तव चरणों में मस्तक धरते।।

दोहा- विशद चालीसा जो पढ़े, विशद भक्ति के साथ।
विशद ज्ञान पा कर बनें, विशद लोक का नाथ।।
विशद ज्ञान पावे सदा, करें विशद कल्याण।
विशद लोक में जा बसे, बने विशद धीमान।।

– ब्र. आस्था दीदी (संघस्थ)

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह-1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु,अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. चारित्र शुद्धि विधान
115. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
116. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
117. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
118. दिव्यध्वनि विधान
119. षट्खण्डागम विधान
120. श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ती संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिंदगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ती के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. शुभषितरत्नावली
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ती पीयूष
153. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
154. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट : उपरोक्त 120 विधानों में से अधिकाधिक विधान कर अथाह पुण्याभव करें।